उपसंहार

उपसंहार

मैत्रेयी पुष्पाजी की बहुमुखी प्रतिभा की लेखिका रूप में पहचान है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में उभरकर आयी महिला कथाकारामें मैत्रेयीजी का नाम अग्रणी है। हिंदी साहित्य के उपन्यास, कहानी, आत्मकथा जैसी विधाओं पर उनका लेखन हुआ है। हिंदी कथासाहित्य में उनका मौलिक और गुणात्मक योगदान रहा है। अल्पावधि काल में उन्होंने हिंदी साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बना ली है। इसी कारण बहुचर्चित लेखिका के रूप में मैत्रेयी पुष्पाजी उभरकर आई है।

❖ प्रथम अध्याय :—

मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्तित्व और साहित्य का परिचय प्रस्तुत अध्याय में मैत्रेयीजी का व्यक्तित्व और साहत्य का परिचय झलकता है। उनका जन्म, बचपन, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, उनकी स्वभाव की विशेषताएँ तथा उनका साहित्य—परिचय, उन्हें प्राप्त पुरस्कार आदि का विवेचन प्रस्तुत अध्याय में किया है। मैत्रेयीजी का एक व्यक्ति और अभिव्यक्ति के रूप में परिचय प्राप्त होता है।

मैत्रेयीजी का जीवन बचपन से ही संघर्षमय रहा है। वह डेढ़ साल की उम्र में ही पिता की छत्रछाया से वंचित रही। पिता के लाड—प्यार स्नेह से वंचित रही इसिलिए मैत्रेयी पर ज्यादा प्रभाव अपनी मॉ का रहा है। बचपन से लेकर शिक्षित जीवन तक उन्हें अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। अपने जीवन में जो कुछ सहा है, वह कटु अनुभूतियॉ उनके साहित्य कृतियों में यथार्थ रूप में परिलक्षित होती है। एक नारी होने के नाते वह नारी की पक्षधर रही

है। उनका व्यक्तित्व सादगी से परिपर्ण रहा है। उनके साहित्य में भी सीधा, सादापन दिखता है। वे स्वभाव से स्वाभिमानी और निड़र है। उनमें साहसी वृत्ती और मानवता के प्रति प्रतिबद्धता, पालतू पशु के प्रति, स्नेह झलकता है। व्यक्तित्व की विशेषताएँ हमें उनके "कस्तुरी कुंडल बसै...." इस आत्मकथा से प्राप्त होती है। अपने साहित्य को वे अपने जीवन का दर्पण मानती है।

मैत्रेयीजी ब्राह्मण कुल के किसान परिवार में जन्मी और गॉव में पली है। उसपर माताजी तथा दादाजी के साथ–साथ ग्रामीण जनजीवन का गहरा प्रभाव है। ग्रामीण जीवन में नारीयों की व्यथाओं को उन्होंने नजदीकी से देखा हैं तथा उसके ताप में स्वयं झुलस उठी है। विशेषत: विधवा मॉ की प्रतिगामी सोच ने उनके व्यक्तित्व को झकझोर दिया। उनका व्यक्तित्व समृद्ध एवं संपन्न दिखाई देता है।

मैत्रेयीजी के कथासाहित्य के केंद्र में नारी–जीवन और ग्राम–जीवन ही रहा है। उनके कथासाहित्य में बुंदेलखंड, ब्रज–प्रदेश के यथार्थ जनजीवन का अंकन प्राप्त होता है। अपनी साहित्यीक मौलिकता और गुणात्मकता के कारण वह अल्पावधि में एक सफल कथाकार के रूप में हमारे सामने आती है। और बहुमुखी प्रतिभा के कारण वह अलग–अलग पुरस्कारों से सन्मानित हुई है।

इस तरह मैत्रेयी पुष्पाजी का व्यक्तित्व उनके कृतित्व को गहराई से समझने में सहायक सिद्ध हुआ है।

❖ द्वितीय अध्याय :—

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों का विषयगत विवेचन।

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया है। विवेच्य उपन्यासों में ग्रामीण नारी जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

मैत्रेयी पुष्पाजी के विवेच्य उपन्यास अपनी मौलिकता को लेकर हमारे सामने आते है। मैत्रेयीजी के 'चाक' उपन्यास में अंतरपुर गॉव की सामाजिक राजनीतीक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। 'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग एक ग्रामीण नारी के रूप में हमारे सामने आती है। सारंग अपनी बहन रेशम की हत्या का बदला लेना चाहती है। उसके ससुरालवालों को कोर्ट में घसीटती है उसका पति सारंग का साथ कुछ हद तक देता है लेकिन बेटा चंदन की जान को खतरा जानकर वह सारंग का साथ छोड़ता है। फिर भी सारंग एक अकेली औरत होकर भी अंत तक संघर्ष करती है लेकिन विपरित परिस्थिति से उसे हार माननी पड़ती है।

अतरपुर गॉव में ऐसी कई घटनाएँ हुई है, जिसमें नारी को अपनी जान गवानी पडी है। अकेली सारंग ही नारी की सुरक्षा, समानता एवं अस्तित्व जैसे अधिकारों के लिए भ्रष्ट समाजव्यवस्था से संघर्ष करती है। मैत्रेयीजी ने सारंग के जरिए ग्रामीण नारी की पीड़ा, विद्रोह और संघर्ष को स्वाभाविक चित्रण किया है। सारंग एक ग्रामीण नारी होकर भी राजनीति के क्षेत्र में पॉव रखकर अपना अस्तित्व बनाती है।

'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग अपने उदात्त मनोभावों से युक्त विवेकशील व्यवहारकुशल, दृढसंकल्पी, अधिकारों के प्रति जागरूक आदि विशेषताओं को लेकर हमारे सामने आती है।

मैत्रेयीजी एक नारी होने के नाते नारी की पक्षधर है। 'चाक' उपन्यास की रेशम विधवा होनेपर गर्भवती बनती है यहीं नारी की समस्या प्रमुख रूप में मैत्रेयीजीने चित्रित की हैं।

'चाक' उपन्यास की रेशम विधवा होनेपर गर्भवति बनती है यहीं नारी की समस्या प्रमुख रूप में मैत्रेयीजीने चित्रित की है।

आजादी के बाद भी नारी पर हो रहे अत्याचारों का चक्र समाप्त नहीं हुआ है। इस चक्रव्युह को तोडने की मॉग मैत्रेयीजी ने की है। इसलिए प्रस्तुत उपन्यास का नाम 'चाक' अपने आप में सार्थक बना है।

मैत्रेयीजी का दूसरा उपन्यास 'अगनपाखी' के केंद्र में प्रमुख रूप से नारी—जीवन ही रहा है। इसमें ग्रामीण नारी की संघर्षशीलता का चित्रण किया है। विवेच्य उपन्यास 'स्मृतिदंश' का पुनर्नवीकरण है। उसमें मैत्रेयीजीने एक नारी के रूप में भुवन की जीवनगाथा हमारे सामने रखी है। भुवन को छोटी उम्र में ही पिता की छत्रछाया से होने के कारण बहुत सारी मुसीबतों का सामना करता पडता है। उसे मॉ की जिम्मेदारी तथा घर और खेत के सारे काम अकेली ही करने पड़ते है।

'अगनपाखी' की नायिका भुवन बचपन से अपने हमउम्र बहन के बेटे चंदर से प्यार करती है। यह प्यार रूढ़िगत व्यवस्था के खिलाफ है। भुवन के जिजाजी कुँवर विजयसिंह का रिश्ता उसके लिए निकालते है। शादी के बाद भुवन को मालुम होता है कि

उसका पति पागल है। फिर भी वह वैवाहिक जीवन में अपने कर्तव्य निभाती है। उसके ससुरालवाले अंधविश्वासी है। वह भुवन को जोगिन बनाकर बच्चा हो जाए इसलिए यज्ञ में बिठाते है। यहॉ ग्राम–जीवन में फैली अंधश्रद्धाओं का चित्रण मैत्रेयीजीने बखुबी से किया है।

भुवन की पति के मृत्यु पश्चात उसके ससुरालवाले उसे सती चढ़ाना चाहते है इसमें उसके देवर अजयसिंह का स्वार्थी हेतु होता है वह अकेले सारी जायदाद हड़पना चाहते है। यहॉ अर्थ केंद्रित और स्वार्थी रिश्तों की पहचान मैत्रेयीजीने की है। 'सती' जैसी अप्रचलित प्रथा का चित्रण इसमें किया है।

भुवन एक ग्रामीण नारी होकर भी इतनी चालाक, व्यवहारकुशल थी की वह अपनी जान बचा सके इसलिए आखिरी इच्छा के रूप में गॉव के देवी दर्शन करने जाती है और वहॉ से भाग जाती है। इसमें मंदिर का पुजारी और चंदर उसका साथ देता है। कुछ दिन गुप्तावस्था में रहने के बाद वह देवर अजयसिंह की हकदारी पर एतराज करके कचहरी में अपनी जायदाद को हिस्सा मॉगती है। यहॉ भुवन के साहसी और क्रांतिकारी नारी रूप में दर्शन होता है।

मैत्रेयीजीने 'अगनपाखी' में भुवन के जरिए पीड़ित ग्रामीण नारी को चित्रित किया है। जीवन की दु:ख तापों की आग में झुलसकर नए सिरे से मानवीय अस्तित्व के साथ उठ खड़े होनेवाली भुवन का चरित्र विवेच्य उपन्यास में मौलिक बन चला है। मैत्रेयीजीने 'ग्राम और नारी' दोनों का यथार्थ अंकन किया है।

ग्रामीण जगह का विकृत यथार्थ, अर्थकेंद्रित एवं स्वार्थांध रिश्ते–नाते, रूढ़िवादी ग्रामीण समाज की कर्मकांड–प्रियता और मानव

धर्म की श्रेष्ठता का विवेच्य उपन्यास में यथार्थ अंकन किया है। यह एक मौलिक रचना है।

❖ तृतीय अध्याय :—

'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास के नारी—पात्र।

मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासो में नारी के सभी रूप चित्रित किए है। उसमें नारी के ग्रामीण विद्रोही, आधुनिक, परंपरागत, अनपढ़, क्रांतिकारी रूप चित्रित है। एक ही नारी को अनेक भूमिकाओं को निभाना पड़ता है। ग्रामीण नारी क्रांतिकारी बन सकती है यह प्रमुखता से दिखाई देता है।

मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासों में ग्रामीण नारी का अंधविश्वास और रूढ़िपरंपरा से ग्रस्त रूप चित्रित किया है। विवेच्य उपन्यासों की सारंग, रेशम भुवन आदि नारियॉ अपने ग्रामीण रूप में हमारे सामने चित्रित की है।

ग्रामीण नारी के शिक्षित और अशिक्षित दोनों रूप चित्रित किए है। 'चाक' उपन्यास में सारंग की विद्रोह नारी के रूप में भूमिका प्रभावी रही है। 'अगनपाखी' की भुवन भी विद्रोही और आधुनिक नारी रूप में परिलक्षित हुई है। विवेच्य उपन्यासों में रूढि—परंपराओं की निभानेवाली परंपरागत नारी भी देखने को मिलती है। न्यायव्यवस्था का आधार लेनेवाली, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक आधुनिक नारी का चित्रण भी मैत्रेयीजीने किया है। अनपढ़ नारी के रूप में सास, बहू, चाची आदि ने अपनी भूमिका निभाई है।

मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासों में क्रांतिकारी नारी के रूप में सारंग और भूवन का हमारे सामने यथार्थ रूप में चित्रण किया है। इसतरह प्रस्तुत अध्याय में नारी–पात्रों की जानकारी मिलती है।

❖ चतुर्थ अध्याय :–

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी के रूप" :–

मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासों में नारी–जीवन को विविध रिश्तों के आधारपर बारीकीसे चित्रित किया है। हर नारी को प्रत्येक रूप में किसी न किसी मुसीबत का सामना करना पड़ता है। फिर भी वह प्रत्येक रूप में अपनी भूमिका निभाती है।

मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासों में नारी का मॉ रूप चित्रित किया है। मॉ को प्यार और त्याग की मूर्ति माना जाता है। मॉ का रूप कही परंपरागत तो कहीं आदर्श, वात्सल्यमयी बना है। जैसे 'चाक' उपन्यास की सारंग वात्सल्यमयी तथा विरहिणी मॉ के रूप में जीवन बीताती है। वह अपने बेटे चंदन के प्यार में वियोग के कारण रोती है। इसतरह मैत्रेयीजीने नारी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और गौरवशाली मॉ का रूप चित्रित किया है।

परिवार में 'बेटी' का रूप प्रेम, ममता, वात्सल्य तथा स्नेह का पात्र है। उपन्यास में भुवन बेटी होने का कर्तव्य निभाती है। बेटी किसी की पत्नी बन जाने के बाद वह पत्नी रूप में पतिद्वारा कभी उपेक्षित, प्रताडित ही दिखाई देती है। जैसे 'चाक' उपन्यास की सारंग अपना पत्नीधर्म निभाने में सरस है फिर भी वह पति रंजीतद्वारा प्रताडित दिखाई देती है। 'अगनपाखी' उपन्यास की भुवन पति के

द्वारा विवश, मानसिक रूप से प्रताडित ही दिखाई देती है। मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासों में पति–पत्नि के पारिवारिक संबंधो को चित्रित किया है।

नारी को एक सास और एक बहू रूप भी निभाना पडता है। 'चाक' उपन्यास में परंपरा से आर रहा सास–बहू का झगडा हुकुमकौर और रेशम के माध्यम से यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है। 'अगनपाखी' उपन्यास में भी भुवन की सास का अंधविश्वासी रूप सामने आता है। 'बहू' के रूप में नारी के विविध पहलू दृष्टिगोचर होते है। कहीं वह आदर्शवादी तो कहीं स्वार्थी और उपेक्षित भी है। बहू के रूप में भुवन का मर्यादावादी रूप चित्रित हुआ है। नारी के अनेक रूपों में बहन का रूप भी अपनी अलग पहचान रखता है। एक बहन अपने दुख–दर्द दुसरी बहन के साथ बॉट लेती है। जैसे 'अगनपाखी' की भुवन मन्नू के साथ दुख–दर्द की चर्चा करती है।

मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासों में नारी के लगभग सभी रूप चित्रित किए है। मानो एक ही नारी में अनेक रूप समाएँ हुए है। जैसे कर्तव्यपरायण बेटी, विरहिणी मॉ, संघर्षशील बहू, अत्याचारी सास, प्रताड़ित पत्नी। साथ ही विद्रोहिणी, अन्याय के खिलाफ आवाज उठानेवाली संघर्षशील नारी भी चित्रित की है। इस तरह मैत्रेयीजी नारी–रूपों का गहराई से अंकन करने में सफल है।

❖ पंचम अध्याय :–

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास में प्रतिबिंबित नारी–विमर्श।"

मैत्रेयी पुष्पाजीने विवेच्य उपन्यासों में नारी–संबंधी विवेचन किया है। जिसमें नारी की समस्याएँ, उसका विद्रोह और उसकी अनुभूतियों का चित्रण किया है।

मैत्रेयीजी के विवेच्य उपन्यासों के विवेचन से स्पष्ट होता है कि नारी किसी भी स्थान पर समस्यामुक्त नहीं है। चाहे वह पिता के घर हो या पति के घर। नारी के रूप में उसे हर जगह समस्या का सामना करना पडता है। बेटी के रूप में भी नारी का पारिवारिक शोषण होता है। जैसे 'अगनपाखी' में भुवन का है। पति के घर भी वह पत्नी के रूप में उपेक्षित, प्रताड़ित होती है। 'चाक' उपन्यासा में विधवा नारी का शोषण चित्रित किया है। विधवा नारी का शोषण परिवारवाले किस प्रकार करते है इसका प्रमाण हमें रेशम के जीवन के द्‌वारा पता चलता है।

नारी का शादी के बाद का अस्वस्थ दांम्पत्य जीवन 'चाक' उपन्यास के सारंग और 'अगनपाखी' उपन्यास के भुवन के द्‌वारा हमारे सामने उद्‌घाटित हुआ है। परिवार में नारी–दमन का यथार्थ रूप हमारे सामने मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासोंद्‌वारा प्रस्तुत किया है। साथ ही नारी अपने अधिकारों के प्रति किसप्रकार जागृत होती है वह रूप भुवन के द्‌वारा मैत्रेयीजीने हमारे सामने उद्‌घाटित किया है।

विवेच्य उपन्यासों में मैत्रेयीजीने नारी विमर्श के अंतर्गत नारी–समस्या के साथ अन्याय का प्रतिकार करनेवारी नारी, आत्मनिर्भर, नारी अस्मिता के प्रति जागृत नारी का रूप चित्रित किया है। साथ ही विधवा नारी का शोषण, नारी–हत्या, भ्रूण–हत्या, नारी–दमन जैसी सामाजिक स्तर पर गंभीर रूप धारण करनेवाली ज्वलंत समस्याओं को मुख्य रूप से विवेच्य उपन्यासों में उठाया गया

है। इसतरह समाज के ग्रामीण जगहों पर हो रहे नारी अत्याचारों का दर्शन कराना उसकी वास्तविकता सामने लाना यहीं उद्देश इन उपन्यासों के अंतर्गत दिखाई देता है।

❖ तात्पर्य :—

मैत्रेयी पुष्पाजी के विवेच्य उपन्यास नारी का यथार्थ रूप हमारे सामने रखते है। ग्रामीण नारी की अलग पहचान कराते है। ग्रामीण नारी विद्रोहिणी बनकर समस्याओं का सामना करके क्रांतिकारी नारी के रूप में परिलक्षित होती है। इसतरह 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास अपनी मौलिकता और गुणात्मकता को लेकर हमारे सामने आते है। मैत्रेयी पुष्पाजी एक सफल उपन्यासकार के रूप में परिलक्षित होती है। मैत्रेयीजी नारी की पक्षधर बनकर हमारे सामने आती है।

❖ प्रस्तुत लघु शोध—प्रबंध की उपलब्धियॉ :—

प्रस्तुत लघु—शोध—प्रबंध के अध्ययन के पश्चात निम्नलिखित उपलब्धियॉ प्राप्त हुई है—

१. मैत्रेयी पुष्पाजी के व्यक्तित्व का प्रभावन उनके कृतित्व में याने उपन्यासों में दिखाई देता है।

२. मैत्रेयी पुष्पाजीने नारी के विविध रूपों को सुक्ष्मता से यथार्थ रूप में अंकित किया है।

३. मैत्रेयीजी के विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु अपनी मौलिकता को प्रदर्शित करती है।

४. मैत्रेयीजी के नारी—पात्र आदर्श के साथ विद्रोही है।

५. मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासों में नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं का गहराई के साथ सुक्ष्मता और यथार्थता से विवेचन किया है।

❖ अध्ययन की नई दिशाएँ

१. "मैत्रेयी पुष्पा की उपन्यासों का शिल्पगत विवेचन"

२. "मैत्रेयी पुष्पा की उपन्यासों में चित्रित नायिकाएँ"

३. "मैत्रेयी पुष्पा की उपन्यासों में वर्णित ग्राम–चेतना"

मैत्रेयी पुष्पाजी के उपन्यासों के उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य हो सकता है।